श्री भगवत भगवान की है आरती

श्री भगवत भगवान की है आरती
श्री भगवत भगवान की है आरती,
पापपयों को पाप से है तारती।
ये अमर ग्रन्थ ये मुक्तत पन्थ,
ये पंचम वेद ननराला,
नव ज्योनत जलाने वाला।
हरर नाम यही हरर धाम यही,
यही जग मंगल की आरती
पापपयों को पाप से है तारती॥

॥ श्री भगवत भगवान की है आरती...॥

ये शाक्न्त गीत पावन पुनीत,
पापों को ममटाने वाला,
हरर दरश ददखाने वाला।
यह सुख करनी, यह दुुःख हररनी,
श्री मधुसूदन की आरती,
पापपयों को पाप से है तारती॥

॥ श्री भगवत भगवान की है आरती...॥

ये मधुर बोल, जग फन्द खोल,
सन्माग ददखाने वाला,
बबगडी को बनानेवाला।
श्री राम यही, घनश्याम यही,
यही प्रभु की मदहमा की आरती
पापपयों को पाप से है तारती॥

॥ श्री भगवत भगवान की है आरती...॥

श्री भगवत भगवान की है आरती,
पापपयों को पाप से है तारती।